अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

"व्यापार" शब्द से अभिप्राय वस्तुओं तथा सेवाओं के लेन-देन से होता है। जब यह लेन-देन विभिन्न देशों के बीच होता है तो इसे 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार' कहा जाता है। सभी देश अपने आप में आत्म-निर्भर नहीं होते है। प्रकृति ने विभिन्न देशों को विभिन्न संसाधनों से सम्पन्न किया है। सामान्यतः एक देश के पास यदि कुछ संसाधन प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं, तो वही कुछ अन्य साधनों की दुर्लभता भी पाई जाती है।

उदाहरण के लिए, खाड़ी देशों के पास खनिज तेल उनकी आवश्यकता से बहुत अधिक पाया जाता है। किन्तु औद्योगिक वस्तुओं तथा खाद्यान्न की दुर्लभता से पीड़ित रहती है। इस परिस्थिति में सीमा पार व्यापार द्वारा अपनी वस्तुओं के अधिक्य के बदले उन वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं जो उनके देश में या तो उपलब्ध नहीं है या बहुत दुर्लभ हैं। अतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अभिप्राय अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण है।

एक अर्थव्यवस्था जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सम्मिलित है उसे **'खुली अर्थव्यवस्था'** कहा जाता है। वही अर्थव्यवस्था जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में शामिल नहीं है उसे 'बंद अर्थव्यवस्था' कहा जाता है तथा वह परिस्थिति जिसमें एक देश कोई विदेशी व्यापार नहीं करता है उसे **Antasky व्यापार-विहीन** कहा जाता है। वह लाभ जो दूसरे देशों के साथ व्यापार से प्राप्त किया जाता है उसे 'व्यापार लाभ' कहा जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अंतरक्षेत्रीय तथा अंतरव्यक्तित्व के बीच अंतर

हर व्यक्ति व्यापार के बिना आत्म-निर्भर हो सकते हैं यदि वे सारे खाद्यान्न, कपड़ा रहने का मकान, डॉक्टरी सेवाएँ, मनोरंजन तथा विलासित वस्तुएँ आदि उत्पादन करे। लेकिन यह किसी व्यक्ति के लिए असंभव है। इसलिए व्यापार विभिन्न लोगों के बीच उन क्षेत्रों में विशिष्ट बनाता है जिसे वे लोग सापेक्षिक रूप से अच्छा कर सकते हैं तथा उन वस्तुओं को दूसरे लोगों से खरीद सकते हैं जिसका उत्पादन वे स्वयं नहीं कर सकते हैं। इस परिस्थिति को अंतरव्यक्ति व्यापार कहा जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अंतरक्षेत्रीय व्यापार पर भी निर्भर करता है। प्रत्येक क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की जाती है। यदि व्यापार इन क्षेत्रों के बीच प्रचलित नहीं होता है। लेकिन व्यापार उन क्षेत्रों में उत्पन्न होता है जहाँ क्षेत्र उन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करने में निपुण होंगे जिस वस्तु का उत्पादन करने में उनके पास पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन हैं। समतलक्षेत्र उन विशिष्ट वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं जिनमें उनकी प्राकृतिक संसाधन की बहुलता है। उदाहरण के लिए समतल क्षेत्र विभिन्न प्रकार के अनाज का उत्पादन कर सकते हैं जबकि पहाड़ी क्षेत्र खनन तथा वन उत्पादन में विशिष्ट हो सकते हैं। इसलिए प्रत्येक क्षेत्र को उन वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में कुशल होना चाहिए जिनके उत्पादन में उनके पास अत्याधिक प्राकृतिक संसाधन है तथा व्यापार द्वारा उन वस्तुओं को उपभोग कर सकते हैं इस प्रकार सभी क्षेत्र अपने आप में आत्म-निर्भर की ओर अग्रसर हो जाएगा।

यदि अंतरव्यक्तित्व तथा अंतरक्षेत्रीय सिद्धांत को यदि देशों के बीच लागू किया जाता है तो उससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उत्पन्न होता है। लगभग सारे देश उन सभी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं जो उनके निवासियों द्वारा माँगी जाती है तथाइसी दौरान इस देश के निवासी उन वस्तुओं का अधिक उपभोग करने लगते हैं जितना कि वह देश उत्पादन नहीं कर रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उस लाभ को प्राप्त करना आवश्यक है जिसे अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण इसे संभव बनाती है। अतः व्यापार प्रत्येक क्षेत्र व्यक्ति तथा देशों के बीच उन वस्तुओं के उत्पादन में अत्याधिक कुशल बनाता है जिसे उत्पादन में वे देश कम लागत में दूसरे देशों की अपेक्षा उत्पादन कर सकते हैं।

व्यक्तिगत विचार के अनुसार, विशिष्टीकरण से अभिप्राय, किसी कार्य विशेष में या वस्तु विशेष के उत्पादन मेंविशिष्ट कौशल

या दक्षता की प्राप्ति से है। लेकिन किसी देश की स्थिति में विशिष्टीकरण से अभिप्राय किसी वस्तु के उत्पादन में देश के संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग से है जिसमें कोई देश विश्व के अन्य देशों की तुलना में निरपेक्ष या तुलनात्मक लागत लाभ अर्जित कर रही है। जब किसी देश के संसाधन किसी विशिष्ट वस्तु के उत्पादन में लगाये जाते हैं तो उस वस्तु का उत्पादन देश की आवश्यकता से किया जाता है। इस परिस्थिति में आधिक्य उत्पादन को निर्यात किया जाता है।

दूसरी ओर, जब संसाधनों को विशिष्ट क्षेत्रों से हटाकर किसी दूसरी वस्तु के उत्पादन में लगाया जाता है तो उस वस्तु के उत्पादन में कमी हो जाती है तथा आयात की परिस्थिति उत्पन्न होती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अर्थात् आयात तथा निर्यात अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का परिणाम है। चूँकि अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण कुछ सिद्धांतों पर निर्भर है जिसे विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दिया गया है। अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का महत्त्व व्यापार से लाभ में समाहित है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के निर्धारक तत्त्व

अंतराष्ट्रीय व्यापार या विशिष्टकरण को प्रभावित करने वाले तत्त्व निम्नलिखित हैं:

(1) **प्राकृतिक निधि (Natural Indowment)**– प्राकृतिक निधि अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का आधार है। इससे अभिप्राय इस देश के उस संसाधन आधार से है जो प्रकृति के निःशुल्क उपहार के रूप में प्राप्त होता है। प्राकृतिक निधियों में प्रकृति और भूमि का उपजाऊपन तथा जलवायु संबंधी स्थितियाँ भी शामिल होती हैं। इसलिए भारत और श्रीलंका ने चाय के लिए उपयुक्त जलवायु स्थितियों के कारण चाय के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त की हुई है।

(2) **तकनीकी ज्ञान (Technical Knowledge)**– अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का एक निर्णायक निर्धारक तत्त्व तकनीकी ज्ञान है। अपनी प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा विश्व के विकसित देशों ने प्राकृतिक निधि की सभी रुकावटों पर नियंत्रण पा लिया है। उदाहरण के लिए, जापान एक तटीय देश है जिसके पास प्राकृतिक संसाधन नगण्य है, परन्तु इसकी तकनीकी वरिष्ठता ने मोटरगाड़ी उत्पादन के क्षेत्र में एक बहुत ही विकसित देश की विशिष्टता प्राप्त कर ली है।

(3) **लागत-अंतर**– उत्पादन की लागत में अंतर, अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का वास्तव में मुख्य आधार है। विभिन्न देश उन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त कर लेते हैं जिनमें निरपेक्ष अथवा तुलनात्मक लागत अंतर होता है।अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता का मुख्य मापक उत्पादित वस्तुओं के लागत में अंतर से है।

(4) **नई आर्थिक प्रणाली**– बहुराष्ट्रीय निगमों के माध्यम तथा नई आर्थिक प्रणाली के उदय होने से विश्व बाजार में वैश्वीकरण ने विभिन्न राष्ट्रों को शेष विश्व के साथ समन्वित होने के लिए बाध्य कर दिया है जिसने विशिष्टीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्त्व बढ़ गया है।

अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण अथवा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं:

(1) **प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग**– अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण प्राकृतिक संसाधनों के सम्पूर्ण उपयोग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अल्पविकसित देश अपने खनिज पदार्थों का स्वयं उपयोग करने का स्थिति में नहीं है। ये देश अपने कच्चे माल का निर्यात विकसित देशों में करते हैं, जहाँ इनका पूरी तरह से उपयोग किया जाता है।

(2) **सस्ती वस्तुएँ:** अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण के कारण सभी देशों को कम कीमतों पर वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं। इसका कारण है कि प्रत्येक देश उन वस्तुओं का उत्पादन करता है जिनके बनाने में तुलनात्मक लागत कम आती है। अतः अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण उपभोग के स्तर को उच्च स्तर पर ले जाता है तथा जीवन के स्तर को उत्तम बनाता है।

(3) **अतिरिक्त उत्पादन:** अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण के कारण प्रत्येक देश को अपने अतिरिक्त उत्पादन को बेचने का अवसर मिलता है। कुछ देश वस्तुओं का उत्पादन अपनी आवश्यकताओं से अधिक कर लेते हैं। इन अतिरिक्त वस्तुओं को अन्य देशों में बेचकर कीमतों में होने वाली कमी को रोका जा सकता है। इसके फलस्वरूप वस्तुओं का निर्यात करने वाले देशों को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

(5) **आर्थिक विकास की संभावनाः** किसी देश का आर्थिक विकास अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर निर्भर करता है। अल्पविकसित देश विकसित देशों से मशीनरी, तकनीकी ज्ञान तथा अन्य सहायक उपकरणों का आयात करके उपलब्ध प्राकृतिक साधनों तथा कच्चे माल का इष्टतम अथवा अनुकूलतम उपभोग कर सकते हैं। इस प्रकार उत्पादन के क्षेत्र में वे सक्षम हो सकते हैं और आर्थिक विकास की स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। रॉबर्टसन के अनुसार 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संवृद्धि का इंजन है।"

(6) **अंतर्राष्ट्रीय सहयोगः** अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण विभिन्न देशों में परस्पर सहयोग की भावना को प्रोत्साहन देता है। यह व्यापारिक देशों के बीच सद्भावना, सौहार्दपूर्णता और मित्रता की भावना का जागृत करता है। ये सभी गुण विश्वशांति के लिए महत्त्वपूर्ण है। हेनरी गोयल के शब्दों में 'अंतर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण लोगों को समय बनाने का सबसे बड़ा माध्यम है।"

व्यापार से लाभ विभिन्न सिद्धांतों पर निर्भर करता है। इन सिद्धांतों के अनुसार, विभिन्न देशों के बीच विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन लागतों में अंतर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के मूल आधार को प्रस्तुत करता है। उत्पादन में लागतों के अंतर तीन प्रकार के हैं जो निम्नलिखित हैं:

(1) **लागतों में निरपेक्ष अंतर**– लागतों में निरपेक्ष अंतर सिद्धांत की व्याख्या एडम स्मिथ द्वारा की गई है। एडम स्मिथ के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य आधार लागतों में पाया जाने वाला निरपेक्ष अंतर है। लागतों में निरपेक्ष अंतर उस समय पाया जाता है जबकि कोई एक देश किसी देश को दूसरे देशों की तुलना में, काफी कम लागत पर उत्पन्न कर लेता है या दूसरा देश किसी अन्य वस्तु को उस देश की तुलना में काफी कम लागत पर उत्पन्न कर लेता है। यह तब संभव होता है, जबकि एक देश में विशेष प्रकार की भूमि, जलवायु परिस्थितियाँ तथा सुविधाएँ पाई जाती है। इस प्रकार एक देश एक वस्तु के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त करके उसका अधिक उत्पादन करता है और इसका निर्यात करता है तथा दूसरी वस्तु का दूसरे देश से आयात करता है जिसमेंकि दूसरा देश विशिष्टता प्राप्त करता है। इसे निम्न तालिका द्वारा दिखाया जा सकता है–

तालिका 1: लागतों में निरपेक्ष अंतर

देश	दो देशों	का उत्पादन
भारत	2	4
नेपाल	4	2
कुल	6	6

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में श्रम की 1 इकाई द्वारा 2 इकाइयाँ चावल या 4 इकाइयाँ, गेहूँ उत्पादित किया जाता है, जबकि नेपाल में श्रम को 1 इकाई द्वारा 4 इकाइयाँ चावल या 2 इकाइयाँ गेहूँ उत्पादित किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि

भारत में 1 इकाई चावल = 2 इकाइयाँ गेहूँ

नेपाल में 1 इकाई चावल = 0.5 इकाई गेहूँ

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि भारत को गेहूँ के उत्पादन में और नेपाल को चावल के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ प्राप्त होता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की एक आवश्यक शर्त है कि दो देशों के बीच वस्तुओं की उत्पादन लागत का अनुपात भिन्न होना चाहिए। भारत में गेहूँ के लिए चावल का लागत अनुपात 1:2 है और नेपाल में यह 1:05 है। यदि ये दोनो देश दोनों वस्तुओं का ही उत्पादन करें और परस्पर व्यापार न हो तो दोनों देशों में दो दिन के श्रम के फलस्वरूप गेहूँ का कुल उत्पादन 6 इकाइयाँ और चावल का कुल उत्पादन 6 इकाइयाँ ही होगा। मान लीजिए कि भारत गेहूँ में तथा नेपाल चावल में विशिष्टता प्राप्त करते हैं और व्यापार करते हैं। इसे निम्न चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है।

चित्र

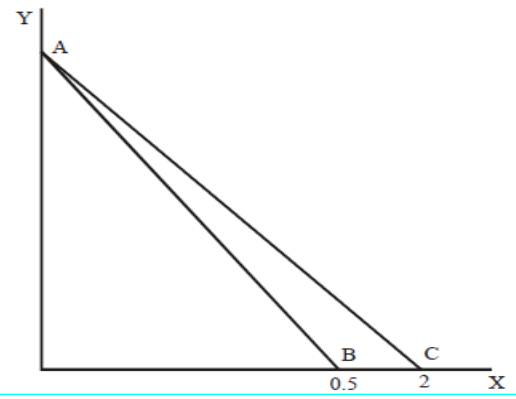

ऊपर के चित्र में **AB** नेपाल की और **AC** भारत का उत्पादन संभावना वक्र है। उत्पादन संभावना वक्र से यह ज्ञात होता है कि उत्पादन के साधनों की एक निश्चित मात्रा का उपभोग करने से किसी वस्तु की एक इकाई का अधिक उत्पादन करने के लिए दूसरी वस्तु की कितनी इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा। इन रेखाओं के ढलान द्वारा विभिन्न वस्तुओं की अवसर लागत स्पष्ट हो जाती है। अवसर लागत से अभिप्राय यह है कि किसी वस्तु की एक अधिक इकाई प्राप्त करने के लिए दूसरी वस्तु की कितनी इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा। यह चित्र समान लागत के नियम पर आधारित है। इसलिए उत्पादन संभावना रेखाएँ सीधी रेखाएँ हैं। **AB** रेखा से ज्ञात होता है कि यदि भारत चावल की 1 इकाई का उत्पादन करता है तो उसे गेहूँ की 0.5 इकाई का त्याग करना पड़ेगा। इसलिए यदि उसे चावल को एक इकाई देकर गेहूँ की 0.5 इकाई से अधिक प्राप्त हो जाती है तो उसे लाभ होगा। इसी प्रकार **AC** रेखा से ज्ञात होता है कि यदि भारत चावल की 1 इकाई का उत्पादन करेगा तो उसे गेहूँ की 2 इकाई का त्याग करना पड़ेगा। इसलिए यदि भारत को गेहूँ की 2 से कम इकाई देने पर चावल की 1 इकाई प्राप्त हो जाती है तो भारत को गेहूँ का उत्पादन करने से लाभ होगा। उपरोक्त चित्र में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभों का **ABC** क्षेत्र की सहायता से प्रदर्शित किया गया है। इन दोनों देशों में लाभ बंटवारा दोनों देशों के बीच स्थापित व्यापार की शर्तों के आधार पर होगा। व्यापार की शर्तें प्रत्येक वस्तु के लिए सम्बन्धित देशों में अनुवर्त्ती माँग द्वारा निर्धारित होती हैं। अतः यह स्पष्ट है कि दो देशों के बीच व्यापार निरपेक्ष लागतों का अंतर होने पर होता है।

तुलनात्मक लागत सिद्धांत

तुलनात्मक लागत सिद्धांत की सर्वप्रथम व्याख्या डेविड रिकार्डो ने अपनी पुस्तक "Principles of Political Economy and Taxation" में किया था। इस सिद्धांत को तुलनात्मक लागत सिद्धांत भी कहा जाता है। लागतों में तुलनात्मक अंतर से अभिप्राय यह है कि एक देश दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन अन्य देश की तुलना में कम लागत पर कर सकता है, परन्तु उसे दोनों में से एक का उत्पादन करने में तुलनात्मक लाभ अधिक होगा, जबकि दूसरी वस्तु के उत्पादन से तुलनात्मक लाभ कम है।

रिकार्डो का तुलनात्मक लागत सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है:

(1) केवल दो देश हैं और वे दो वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

(2) उत्पादन का एक भाग साधन श्रम है और उत्पादन लागत को श्रम की इकाइयों में मापा जाता है।

(3) श्रम की सब इकाइयाँ एक समान हैं।

(4) उत्पादन पर समान प्रतिफल का नियम लागू होता है।

(5) उत्पादन के साधन देश के अन्तर पूर्णतया गतिशील हैं परन्तु दो देशों के बीच पूर्णतया गतिहीन हैं।

(6) यातायात की कोई लागत नहीं है।

(7) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सभी सरकारी नियंत्रणों से मुक्त है।

(8) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में लगे सभी देशों में पूर्ण रोजगार है।

(9) वस्तु बाजार तथा साधन बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता है।

रिकार्डो के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य कारण लागतों का तुलनात्मक अंतर है। लागतों के तुलनात्मक लागत अंतर से अभिप्राय यह है कि एक देश दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन अन्य देश की तुलना में कम लागत पर कर सकता है, परन्तु उसे दोनों में से एक का उत्पादन करने में तुलनात्मक लाभ अधिक है, जबकि दूसरी वस्तु के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ कम है। दूसरा देश दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन अधिक लागत पर करता है, परंतु उसको दोनों में से एक वस्तु का उत्पादन करने में तुलनात्मक हानि कम है जबकि दूसरी वस्तु का उत्पादन करने में तुलनात्मक हानि अधिक है।

तुलनात्मक लाभ से अभिप्राय उस लाभ से है जो एक देश अन्य देश की तुलना में एक वस्तु के उत्पादन में प्राप्त करता है जबकि अन्य वस्तुओं के रूप में उस वस्तु का उत्पादन अन्य देश की तुलना में कम लागत पर किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए दिल्ली में एक सबसे उत्तम वकील है जो एक बहुत अच्छा टाइपिस्ट भी है। उसका एक मुन्शी टाइप जानता है, परन्तु उसे वकालत का ज्ञान बहुत कम है। बेशक वकील दोनों कार्यों में योग्य एवं निपुण है, परन्तु टाईप की तुलना में वकालत में अधिक समय लगाने से उसे तुलनात्मक लाभ अधिक होगा। मुंशी दोनों कार्यों में ही उससे अयोग्य है, परन्तु टाइप करने में उसकी तुलनात्मक हानि कम है। वकील को स्वयं वकालत करने तथा मुंशी से टाइप करने में अपेक्षाकृत लाभ अधिक होगा।

संक्षेप में एक देश दो A तथा B वस्तुओं के उत्पादन से निरपेक्ष लागत लाभ अधिक पा सकता है। परनतु वह देश B की तुलना में A के निपुणता प्राप्त करने में विचार कर सकता है, क्योंकि उसे A से B की तुलना में अधिक तुलनात्मक लागत लाभ मिल सकता है। इसे निम्न तालिका द्वारा दिखाया जा सकता है।

देश	कपड़ा (मीटर)	गेहूँ (किलोग्राम)
भारत	0.60 मीटर कपड़ा	1.67 किलोग्राम गेहूँ
नेपाल	2.00 मीटर कपड़ा	0.50 किलोग्राम गेहूँ

हम जानते हैं कि भारत में 1 किलाग्राम गेहूँ के उत्पादन की अवसर लागत कपड़े के उत्पादन के 0.60 मीटर के बराबर है। जबकि नेपाल में यह 2 मीटर कपड़े के बराबर है। तालिका का दूसरा कॉलम यह बताता है कि नेपाल में 1 मीटर कपड़ा उत्पादन करने की अवसर लागत 1.07 किलोग्राम गेहूँ के बराबर है जबकि नेपाल में 0.50 किलोग्राम गेहूँ के बराबर है। अतः इस परिस्थिति में भारत को गेहूँ के उत्पादन में तथा नेपाल को कपड़े के उत्पादन करने से तुलनात्मक लागत लाभ प्राप्त होता है। इसे निम्न चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है।

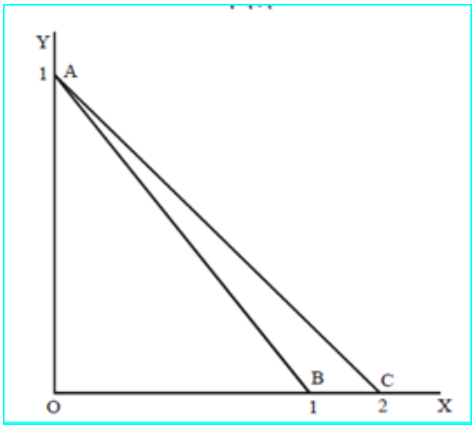

उपरोक्त चित्र में AB भारत की उत्पादन संभावना रेखा तथा AC नेपाल की उत्पादन संभावना रेखा है। इसका अर्थ है कि भारत को 1 इकाई चावल प्राप्त करने के लिए 4 इकाई गेहूँ का त्याग करना पड़ता है। नेपाल 1 इकाई चावल का त्याग करके 2 इकाइयाँ गेहूँ प्राप्त कर सकता है। स्पष्ट है कि भारत को चावल के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ अधिक है तथा नेपाल को गेहूँ के उत्पादन में तुलनात्मक हानि कम है। भारत नेपाल को चावल की 1 इकाई देकर गेहूँ की 1 इकाई से अधिक इकाई प्राप्त कर सकता है तथा

नेपाल भारत को गेहूँ की 2 से कम इकाई देकर चावल की 1 इकाई प्राप्त कर सकता है। दोनों देशों को होने वाला लाभ त्रिभुज ABC द्वारा दिखाया गया है। इस लाभ का वितरण दोनों देशों के बीच विद्यमान व्यापार की शर्तों के आधार पर होगा। व्यापार की शर्तों का निर्धारण प्रत्येक देश की वस्तु की अनुवर्त्ती भाग के आधार पर होगा।

सिद्धांत की आलोचनाएँ

रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित तुलनात्मक लागत का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। सैम्युलसन के अनुसार, तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत में सच्चाई क एक महत्त्वपूर्ण झलक दिखाई देती है। इस सिद्धांत के तर्कपूर्ण दृष्टि से युक्ति संगत होने पर भी इसके कई दोष हैं–

(1) **केवल आदर्शात्मक सिद्धांत**– रिकार्डो का तुलनात्मक लागत का सिद्धांत केवल एक आदर्शात्मक सिद्धांत है। इससे यह ज्ञात होता है कि देश के साधनों का कुशलतम प्रयोग कैसे किया जा सकता है परन्तु यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की रचना अथवा निर्यातों एवं आयातों की व्याख्या करने में असमर्थ है तथा इनकी समस्याएँ कौन सी हैं इसको बतलाने में भी असमर्थ है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की एक वास्तविक विवेचना नहीं है।

(2) **श्रम के मूल्य सिद्धांत पर आधारित**– तुलनात्मक लागत का सिद्धांत श्रम के लागत सिद्धांत पर आधारित है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी वस्तु की लागत इसके निर्माण के लिए आवश्यक श्रम की मात्रा पर निर्भर करती है, परन्तु वास्तव में किसी वस्तु की लागत पर श्रम के अतिरिक्त अन्य साधनों जैसे भूमि पूँजी आदि की कीमत का प्रभाव पड़ता है। अतएव इस सिद्धांत के आलोचक श्रम लागत के स्थान पर मुद्रा लागत के रूप में इसकी विवेचना करना पसंद करते हैं।

(3) **परिवहन लागतों की अवहेलना**– तुलनात्मक लागत सिद्धांत का प्रमुख दोष यह है कि इसमें परिवहन लागतों पर विचार नहीं किया गया है। कुछ वस्तुओं की परिवहन लागत उत्पादन लागतों से भी अधिक होती है। इसलिए वस्तुओं का आयात अथवा निर्यात करते समय उत्पाद, लागत तथा यातायात लागत दोनों को मिलाकर कुल लागतों पर विचार किया जाना चाहिए। यातायात लागतें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को काफी प्रभावित करती हैं, इसलिए इन लागतों की अवहेलना नहीं की जा सकती।

(4) **स्थिर लागतों के नियम पर आधारित**– इस सिद्धांत की यह मान्यता है कि उत्पादन में कमी या वृद्धि करने पर प्रति इकाई उत्पादन लागत समान रहती है, अवास्तविक ही नहीं बल्कि अवैज्ञानिक भी है। सामान्यतया यह देखा गया है कि उत्पादन पर बढ़ती लागत का नियम या घटती लागत का नियम लागू होता है। स्थिर लागत के नियम के लागू होने की संभावना कभी-कभी और वह भी थोड़े समय के लिए होती है।

(5) **पूर्ण विशिष्टीकरण की असंभावना**– अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेने वाले देशों का कुछ वस्तुओं में पूर्ण रूप से विशिष्टीकरण प्राप्त करना संभव नहीं है। मान लीजिए भारत और नेपाल व्यापार करते हैं। भारत सूती कपड़े के उत्पादन में तथा नेपाल ऊनी कपड़े के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त करता है। नेपाल एक बहुत छोटा सा देश होने के कारण भारत के ऊनी कपड़ों की माँग को पूरा नहीं कर सकता और न ही नेपाल में भारत से निर्यात हो सकने वाले कुल सूती कपड़े की माँग हो सकती है। अतएव इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तभी संभव है, यदि दो समान मूल्य वाली वस्तुओं का दो समान आकार वाले देशों में व्यापार हो।

(6) **स्वतंत्र व्यापार पर आधारित**– परम्परावादी अर्थशास्त्री यह मानकर चलते थे कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सब प्रकार के प्रतिबन्धों से स्वतंत्र है, परन्तु आधुनिक युग में स्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। आज के युग में कोई भी देश दूसरे दूसरे देश पर निर्भर नहीं रहना चाहता और अनिश्चितताओं से बचना चाहता है। इसके अतिरिक्त बहुत सी अन्य परिस्थितियों जैसे अपूर्ण प्रतियोगिता, व्यापार प्रतिबन्ध, राज्य व्यापार, आयात-निर्यात कर तथा आर्थिक नियोजन के कारण स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संभावना कम है।

(7) **स्थिर दशाएँ**– इस सिद्धांत में यह मान्यता भी निहित है कि दो देशों में लोगों की रुचियों तथा उत्पादन क्रियाओं में परिवर्तन नहीं आता। इसके अतिरिक्त भूमि, पूँजी तथा श्रम की पूर्ति स्थिर है। परन्तु वास्तव में संसार में इस प्रकार के परिवर्तन समय-समय पर होते रहते हैं। इसलिए यह मान्यता निराधार है।

(8) **एक पक्षीय**– रिकार्डो का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत एक पक्षीय है। यह सिद्धांत व्यापार के पूर्ति पक्ष को ध्यान में रखता है परन्तु मांग पक्ष की अवहेलना करता है। इस सिद्धांत से यह तो ज्ञात होता है कि एक देश कौन सी वस्तुओं का आयात या निर्यात करता है परन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि व्यापार की शर्तों तथा विनिमय की दर कैसे निर्धारित होती है।